SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 3

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

भाग - 3

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

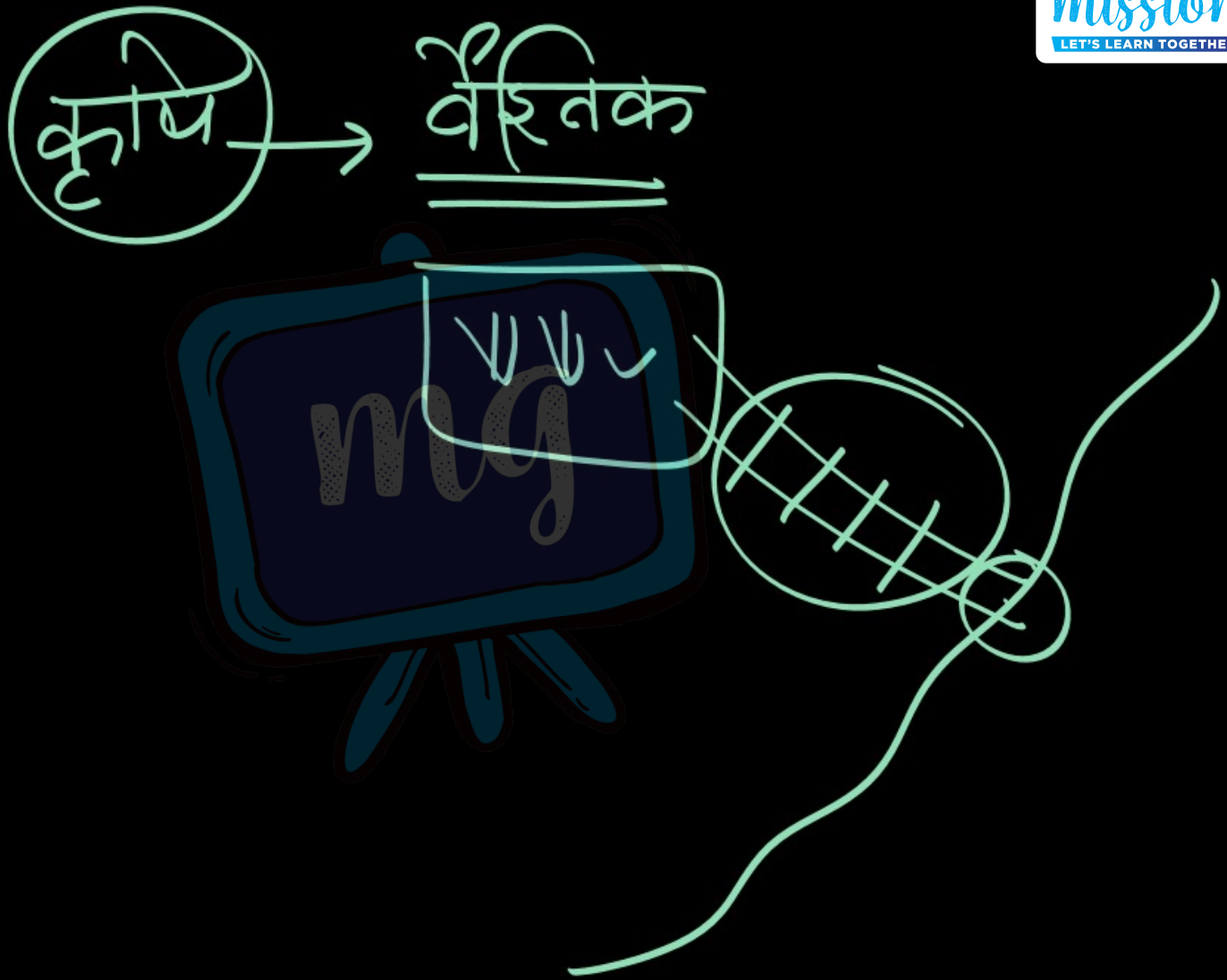

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि ↑



तकनीक की भूमिका :-

- 19वीं सदी में आये परिवर्तनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी यदि रेलवे, पानी के जहाज, टेलिग्राफ जैसे तकनीकी प्रगति नहीं हुई होती।
- तकनीकी प्रगति चारों ओर हो रहे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों से ही होती है।
- उदाहरण के लिए - औपनिवेशीकरण के कारण ही यातायात और परिवहन के साधनों में भारी सुधार किये गये।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. कृषि के एक वैश्विक अर्थव्यवस्था बनने में तकनीक ने क्या भूमिका अदा करी?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- तेज चलने वाली रेलगाड़ियां बनीं, जलपोतों का आकार बढ़ाया गया।
- जिससे कृषि उत्पादों को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में कम लागत पर व आसानी से पहुंचाया जा सके।
- मांस उत्पादों के व्यापार से इस प्रक्रिया को हम ठीक ढंग से जान सकते हैं।
- 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को मांस का निर्यात नहीं किया जाता था।
- उस समय तक केवल जिन्दा जानवर ही भेजे जाते थे जिन्हें यूरोप ले जाकर काटा जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- लेकिन जिंदा जानवर बहुत ज्यादा जगह घेरते थे।
- बहुत सारे तो लंबे सफर में मर जाते थे या बीमार पड़ जाते थे। बहुतों का वजन गिर जाता था या वे खाने लायक नहीं रह पाते थे।
- इसलिए मांस खाना एक महंगा सौदा था और यूरोप के गरीबों की पहुंच से बाहर था।
- दूसरी तरफ ऊंची कीमतों के कारण मांस की मांग तथा उत्पादन दोनों ही कम रहते थे।
- नई तकनीक आने पर स्थिति बदल गई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेटर लगा दिये गये जिससे जल्दी खराब होने वाली चीजें भी लंबी यात्राओं पर ले जायी जा सकती थी।
- इसके बाद तो जानवरों की यात्रा से पहले ही मारा जाने लगा।
- अमेरिका या न्यूजीलैंड सब जगह से जानवरों की बजाय उनका मांस ही यूरोप भेजा जाने लगा।
- इससे न केवल समुद्री यात्रा में आने वाला खर्चा कम हो गया बल्कि यूरोप में मांस के दाम भी गिर गये।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यूरोप के गरीबों को ज्यादा विविधतापूर्ण खुराक मिलने लगी।
- पहले उनके पास सिर्फ आलू और ब्रेड होते थे अब बहुत सारे लोगों के भोजन में मांसाहार भी शामिल हो गया।
- जीवन स्थिति सुधरी तो देश में शांति स्थापित होने लगी और दूसरे देशों में साम्राज्यवादी मंसूबों के विचार बनने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

तकनीक → कृषि ↑

1) रेलगाडी → ↑ → सस्ता

2) जलपोत → ↑ → ज्यादा

Eg. अमेरिका → जानवर → युरोप

जहाज़ → Fridge → बढ़ गरीब

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

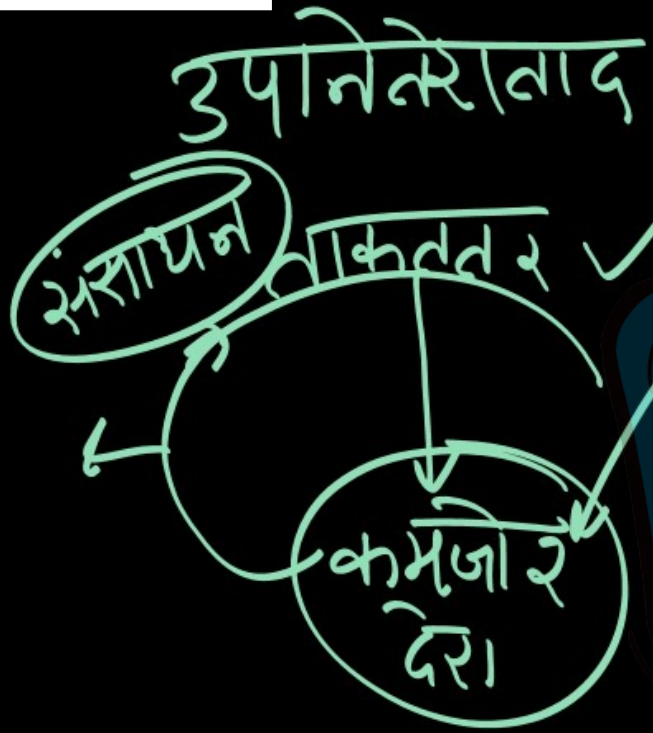

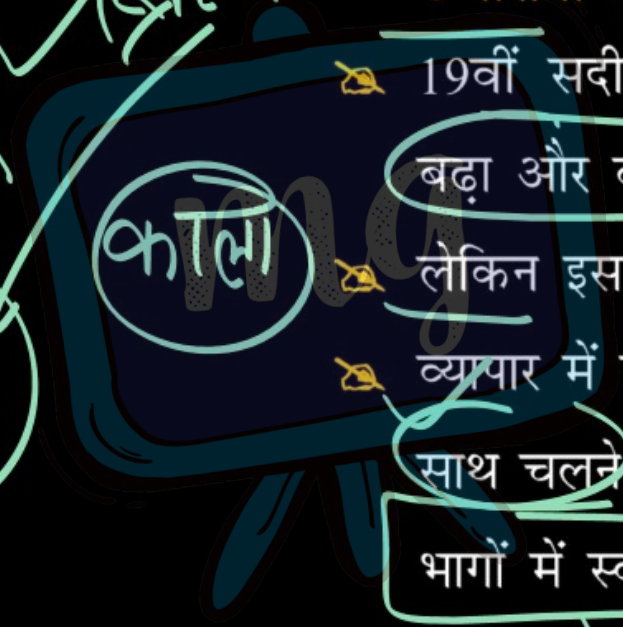

उन्नीसवीं सदी के आखिर में उपनिवेशवाद

- 19वीं सदी के आखिरी दशकों में व्यापार बढ़ा और बाजार तेजी से फैलने लगे।
- लेकिन इसका एक स्याह पक्ष भी था।
- व्यापार में वृद्धि और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ चलने की होड़ में दुनिया के बहुत सारे भागों में स्वतंत्रता और रोजगार छिनने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

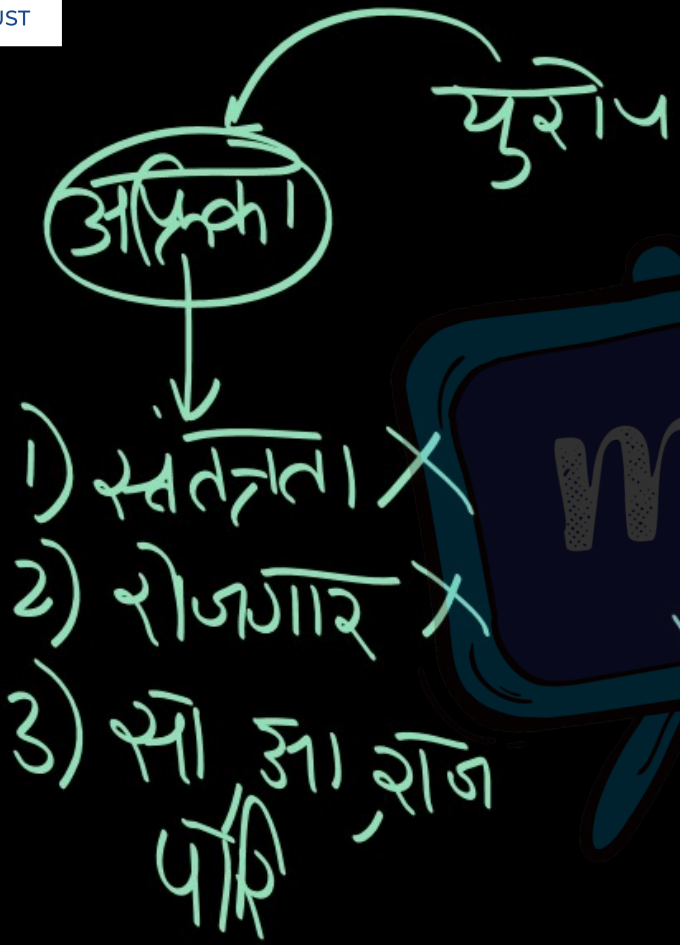

- यूरोपीयों की अनेक स्थान पर विजय हुई जिससे बहुत सारे कष्टदायक परिवर्तन आये। जैसे – आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं पारिस्थितिकीय।
- इसी के साथ औपनिवेशिक समाजों को विश्व अर्थव्यवस्था में समाहित कर लिया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

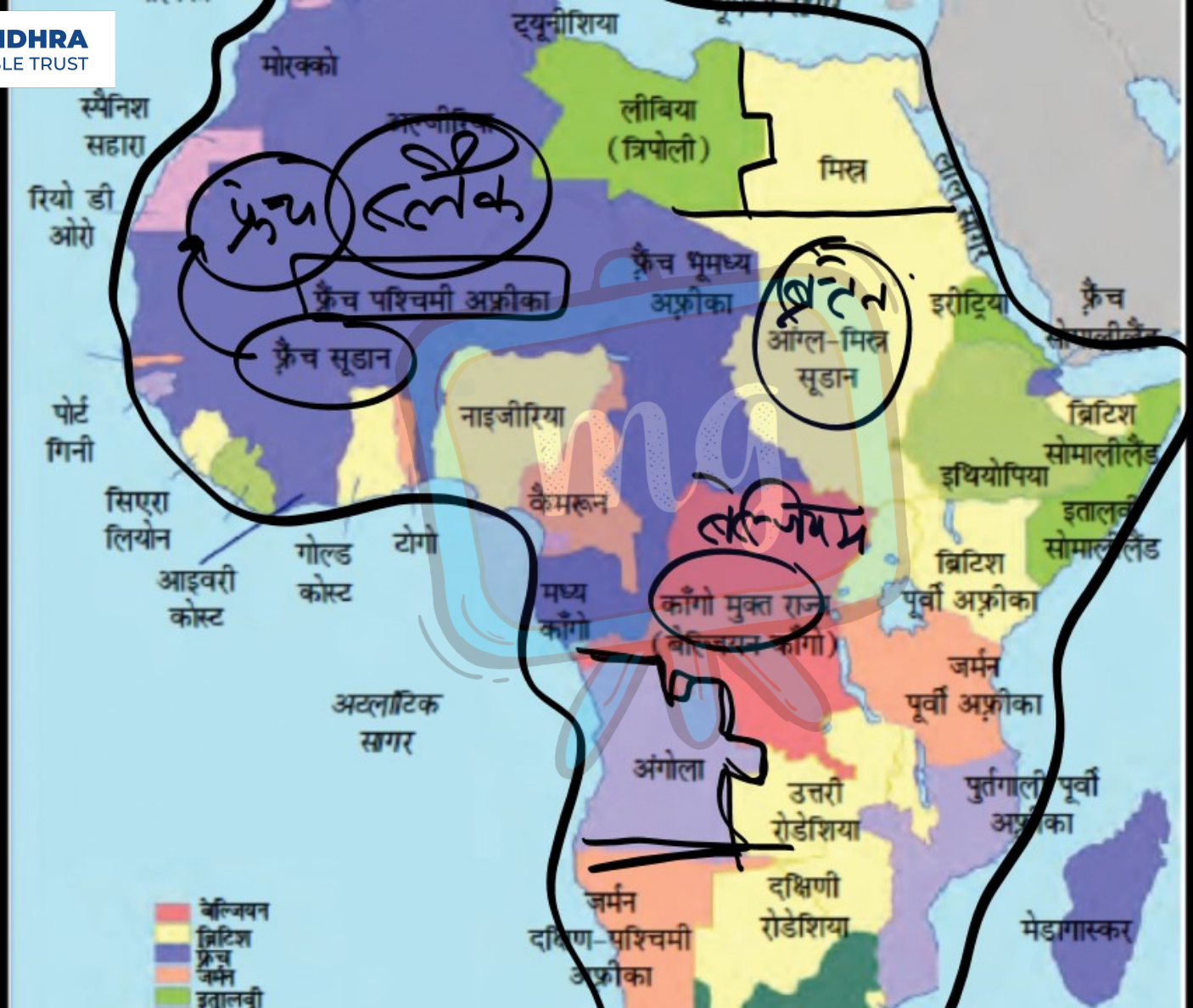

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बेल्जियम
फ्रांस
ब्रेतेन
जर्मनी
बर्लिन लेक

- अफ्रीका के इस मानचित्र में कुछ देशों की सीमाऐं तो बिल्कुल सीधी लकीर जैसी है। जैसे कि मानों उन्हें स्केल रखकर खींचा गया है।
- दुर्भाग्यवश यही हुआ भी था।
- अफ्रीका पर कब्जे की कोशिश में लगी यूरोपीय ताकतों ने अपने अपने इलाके बांटने के लिए इसी तरीके का सहारा लिया था।
- 1885 के यूरोप के ताकतवर देशों की बर्लिन में एक बैठक हुई जिसमें अफ्रीका के नक्शे पर इसी तरह से लकीरें खींचकर उसे आपस में बांट लिया गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

श्रम



- 19वीं सदी के आखिर में ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने शासन वाले विदेशी क्षेत्रफल में भारी वृद्धि कर ली थी।
- बेल्जियम और जर्मनी नयी औपनिवेशिक ताकतों के रूप में सामने आये।
- 1890 के दशक में अमेरिका भी स्पेन के कब्जे वाले कुछ उपनिवेशों पर कब्जा करके नई औपनिवेशिक ताकत बन गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

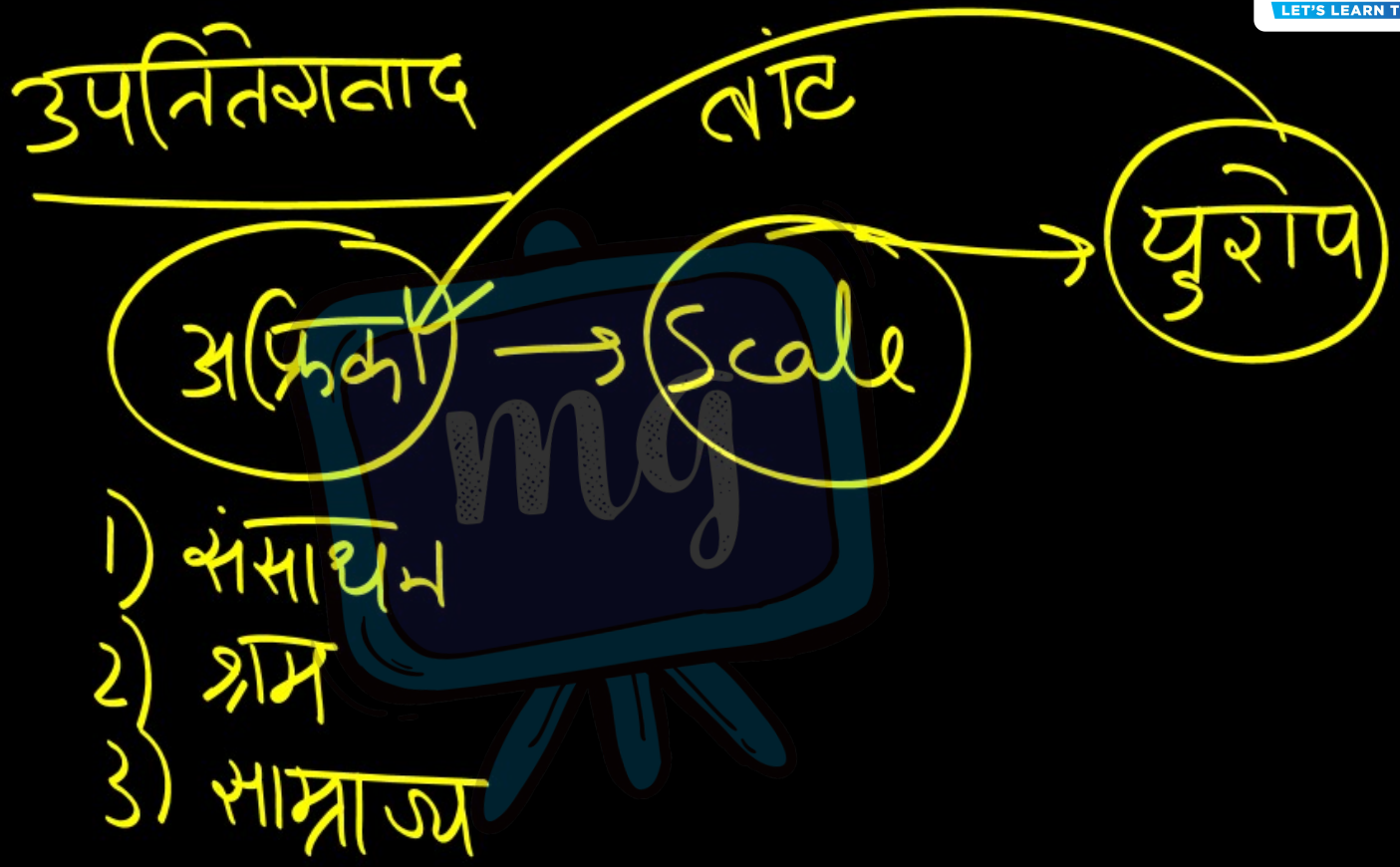

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

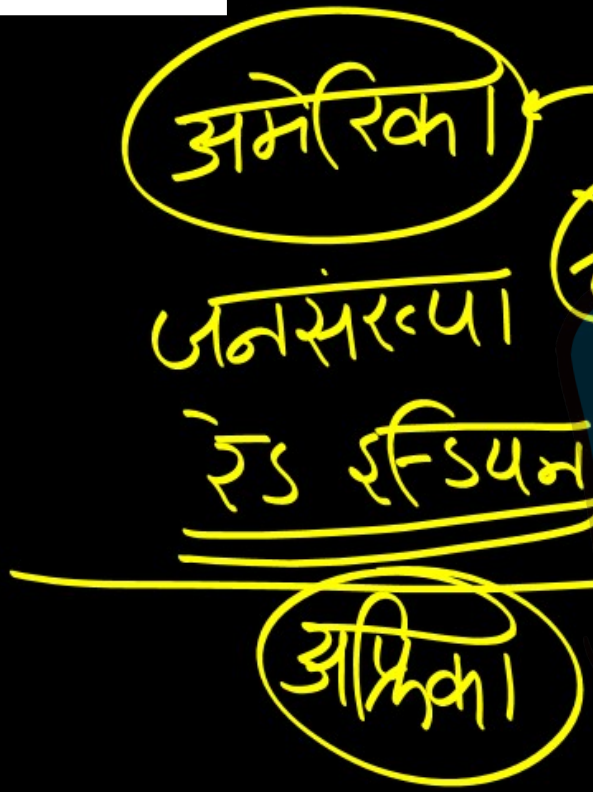

उपनिवेशवाद से औपनिवेशिक समाजों की अर्थव्यवस्था तथा रोजी-रोटी पर प्रभाव

रिंडरपेस्ट या मवेशी प्लेग :-

- अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी तेजी से फैल गयी।
- मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा।
- इस उदाहरण से पता चलता है कि हमलों और विजयों के इस युग में दुर्घटनावश फैली मवेशियों की बीमारी ने हजारों लोगों का जीवन व भाग्य बदल कर रख दिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

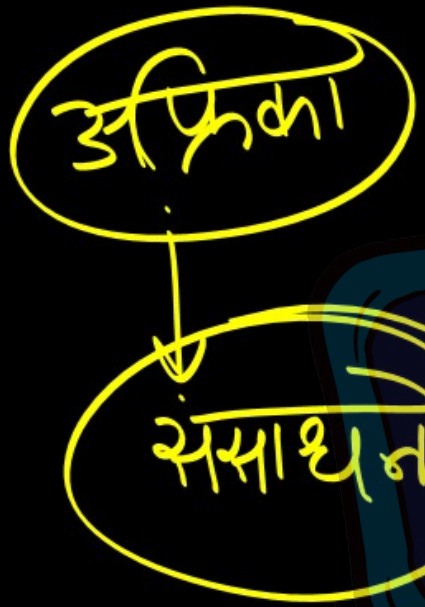

- प्राचीन काल से ही अफ्रीका में जमीन की कोई कमी नहीं रही तथा वहां की आबादी भी बहुत कम थी।
- सदियों तक अफ्रीकियों की जिंदगी व आजीविका जमीन और पालतू पशुओं के सहारे ही चलती रही।
- वहां पैसे या वेतन पर काम करने का चलन नहीं था। क्योंकि वेतन पर काम करने की जरूरत ही नहीं थी।
- 19वीं सदी के आखिर में यूरोपीय ताकतें अफ्रीका के विशाल भूक्षेत्र और खनिज भंडारों को देखकर इसकी ओर आकर्षित हुई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

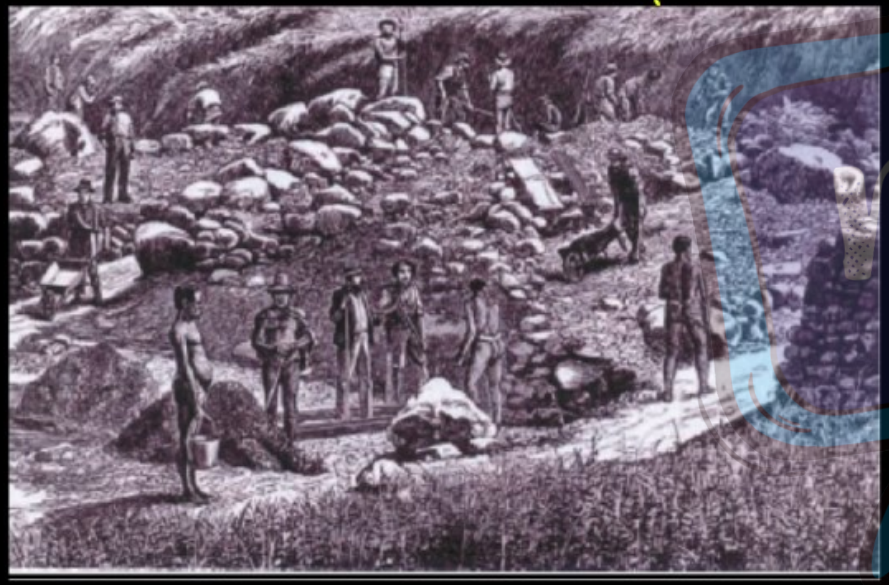

- यूरोपीय लोग अफ्रीका में बागानी खेती करना तथा खदानों का दोहन कर यूरोप ले जाना चाहते थे।
- लेकिन वहां एक ऐसी समस्या पेश आई जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। वहां के लोग वेतन पर काम नहीं करना चाहते थे।
- मजदूरों की भर्ती और उन्हें अपने पास रोके रखने के लिए मालिकों ने बहुत सारे हथकंडे आजमा कर देख लिये लेकिन बात नहीं बनी।
- उन पर भारी भरकम कर लाद दिये गये जिनका भुगतान केवल तभी किया जा सकता था जब वे बागानों या खदानों में काम करें।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- काश्तकारों की जमीन छीनने के लिए उत्तराधिकार कानून बदल दिया गया।
- नये कानून के अनुसार अब परिवार के केवल एक ही सदस्य को पैतृक संपत्ति मिलेगी।
- इस कानून ने परिवार के बाकी सदस्यों को श्रम बाजार में ढकेलने का प्रयास किया।
- खानकर्मियों को बाड़ों में बंद कर दिया गया। उनके खुलेआम घूमने फिरने पर पाबंदी लगा दी गयी।
- तभी वहां रिंडरपेस्ट नामक विनाशकारी पशु रोग फैल गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

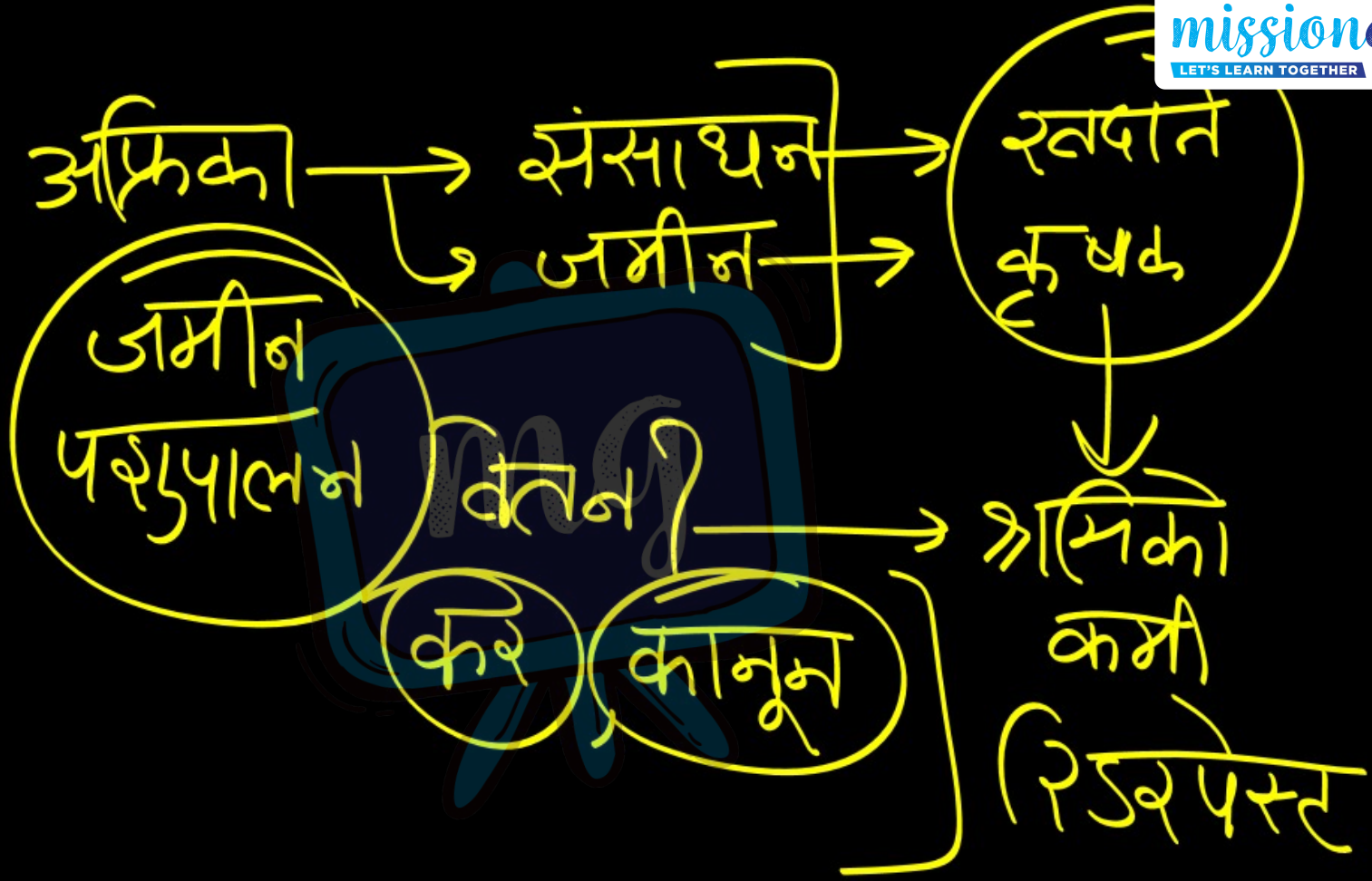

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

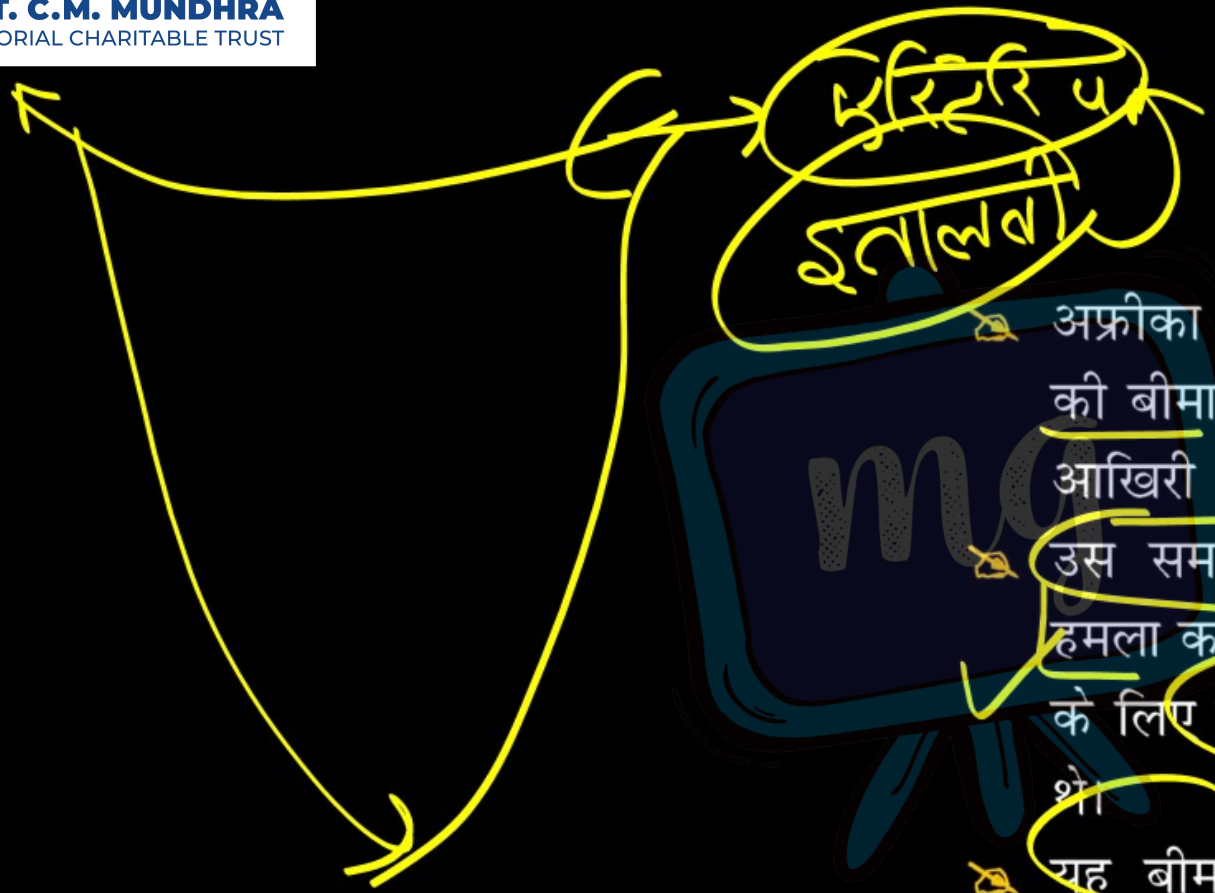

रिंडरपेस्ट

- अफ्रीका में रिंडरपेस्ट (मवेशी प्लेग) नाम की बीमारी सबसे पहले 1880 के दशक के आखिरी सालों में दिखाई दी।
- उस समय पूर्वी अफ्रीका में एरिट्रिया पर हमला कर रहे इतालवी सैनिकों का पेट भरने के लिए एशियाई देशों से जानवर लाये जाते थे।
- यह बीमारी ऐशियाई देशों से आये उन्हीं जानवरों के जरिये यहां पहुंची थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अफ्रिका में उपनिवेशवाद का उदय किस प्रकार हुआ?

Q. रिंडरपेस्ट क्या था?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Contract labour.
मजदूर

भारत से अनुबंधित श्रमिकों का जाना :-

- 19वीं सदी में भारत से अनुबंधित (गिरमिटिया) श्रमिकों को दूर-दूर के देशों में ले जाया जाता था।



- 19वीं सदी में भारत व चीन के लाखों मजदूरों को बागानों, खदानों और सड़क व रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर देशों में ले जाते थे।
- इन श्रमिकों के साथ अनुबंध या एग्रीमेंट किया जाता था।
- इन अनुबंधों में यह शर्त होती थी कि यदि मजदूर अपने मालिक के बागानों में 5 साल काम कर लेगा तो फिर वह स्वदेश लौट सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि
रोजगार

- भारत में ज्यादातर ये श्रमिक पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखे इलाके से जाते थे।
- 19वीं सदी के मध्य में इन इलाकों में भारी बदलाव आने लगे थे –
  (i) कुटीर उद्योग खत्म हो रहे थे।
  (ii) जमीनों का भाड़ा बढ़ा दिया गया था।
  (iii) खानों और बागानों के लिए जमीनों को साफ किया जा रहा था।
- वे बँटाई पर जमीन ले तो लेते थे लेकिन उसका भाड़ा नहीं चुका पाते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



त्रिनिदाद के कोको बागान में काम करते भारतीय गिरमिटिया मजदूर, उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में

- उन पर कर्जा चढ़ने लगा तो काम की तलाश में उन्हें अपने घर बार छोड़ने पड़े।
- भारतीय श्रमिकों को मुख्य रूप से कैरेबियन द्वीप समूह (त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम), मारीशस व फिजी ले जाया जाता था।
- तमिल आप्रवासी सीलोन और मलाया जाकर काम करते थे।
- बहुत सारे अनुबंधित श्रमिकों को असम के चाय बागानों में काम करवाने ले जाते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

19वीं → अनुबंधित मजदूर

कैरेबिनपन

भारत ॥ चीन → काम

1) सूखा-कृषि

2) कुटिर